ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-12* March-2021
Anthology : The Research

महाभारत में निहित शैक्षिक व्यवस्था की प्रासंगिकता

Relevance of Educational System Contained In Mahabharata

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 20/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

मंजू बंसल
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
राजीव एकेडमी टेक्नॉलाजी
एंड मैनेजमेंट कॉलेज
मथुरा, उ0प्र0, भारत

सारांश

महर्षि व्यास द्वारा रचित महाभारत ग्रंथ सभी ग्रंथों में श्रेष्ठ हैं। इसमें भारतीय जीवन मूल्य परंपरा नीति धर्म गाथाओं लोक गाथाओं लोक कथाएं वीर व्रत इतिहास और ज्ञान सारणीयों को एक साथ मिलाकर उपस्थित किया गया है। महाभारत कालीन शिक्षा प्रणाली में आचरण व मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया गया थ। शिक्षा बहुमुखी और बहुआयामी के साथ बहुरूपी भी थी ।आज की शिक्षा के लिए महाभारत एक दर्पण है।वर्तमान काल की शिक्षा मे यथाअनुकूल करने का पथ इसमें प्रशस्त किया है।महाभारत काल में व्यास जी ने उस काल की शिक्षण संस्थाओं का वर्णन किया ह। जैसे आश्रम गुरुकुल राज्यसभा में श्रेणी आदि जिन संस्थाओं में विद्यार्थी शिक्षा लेने जाया करते थे।शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना था प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस काल में शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य था क्योंकि उन्हें ज्ञान प्रचार प्रसार के लिए शिक्षा प्राप्त करना करना था। करना अनिवार्य है महाभारत काल में शिक्षार्थी को संबंधित विषय में पारंगत करना तथा उसे विशेषज्ञता प्रदान करना है। महाभारत काल में शिक्षा का कोई निश्चित पाठ्यक्रम नहीं था ज्ञानी वृद्ध तपस्वी एवं साधक जीवन का व्यापक अनुभव प्राप्त व्यक्तियों से के द्वारा शिक्षा प्राप्त करते थे। महाभारत काल वेदों शास्त्रों का ज्ञान प्रदान किया जाता था महाभारत काल में शिक्षण विधि प्रत्यक्ष थी इसमें विद्यार्थी गुरु की बात को पूरे मनोयोग से सुन कर उसे अपने जीवन में आत्मसात करते थे गुरु शिष्य संबंध अत्यधिक स्नेह भरा होता था परंतु नियमों में कठोरता होती थी शिष्य गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे तथा अनुशासन स्वता स्पोर्ट्स रहता था। महाभारत काल में स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया गया ,परंतु उच्च कुल की स्त्रियां ही शिक्षा ग्रहण करती थी ।स्त्रियों को वेदों की शिक्षा दी जाती थी।

The Mahabharata texts composed by Maharishi Vyasa are the best among all the texts. In this, Indian life values tradition policy, religion stories, folk tales, folk tales, heroic fasting history and knowledge tables have been combined together. Special attention was paid to conduct and values in the Mahabharata era education system. Education was multi-faceted and multidimensional as well. Mahabharata is a mirror for today's education. It has paved the way for adapting the present-day education. In the Mahabharata period, Vyas ji has described the educational institutions of that period. For example, in Ashram Gurukul Rajya Sabha, category etc., the institutions where students used to go for education. The aim of education was to make all-round development of human beings, it was compulsory for every person to get education during this period, because they had to get education for the propagation of knowledge. It is mandatory to master the learner in the related subject and give him expertise in the Mahabharata period. There was no definite course of education in the Mahabharata period, learned elders and ascetics used to get education from people with vast experience of life. Knowledge of Vedas and scriptures was imparted in Mahabharata period. In Mahabharata period, the teaching method was direct. In this, students used to listen to the Guru's mind in their whole life and assimilate it in their life. The disciples were educated in the Gurukul and the discipline was Sweta Sports. In the Mahabharata period, special emphasis was given on women's education, but only women of higher clans took education. Women were taught Vedas.

मुख्य शब्द : शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा का उद्देश्य, गुरु–शिष्य संबंध ,अनुशासन, स्त्री शिक्षा।

Nature of Education, Purpose of Education, Guru-disciple Relationship, Discipline, Female Education.

प्रस्तावना

महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित ग्रंथ महाभारत जो सभी ग्रंथों में श्रेष्ठ माना जाता है तथा भारत वर्ष के गांव–गांव और गली–गली में इस ग्रंथ की गूंज सुनाई देती ह। इसके द्वारा श्रद्धा की ऐसी नितांत निर्मल और अजस्र धारा प्रवाहित हुई है जिसने इस देश के जनमानस को सदैव सरोवर किया है। गीता भगवान कृष्ण का गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है "श्रद्धावान्लमते ज्ञान"। यही कारण है कि हम संपूर्ण श्रद्धा के साथ और समस्त दुराग्रह से दूर रहकर चारों दिशाओं से आने वाले ज्ञान को प्राप्त करने और आत्मसात करने में कभी संकोची नहीं रहे हैं।

कोई भी समाज या राष्ट्र उसकी शिक्षा व्यवस्था का प्रतिबिंब होता है। शिक्षा के सुविचारित उद्देश्य एवं तदनुरूप पाठ्यक्रम ही नागरिकों को सुसंस्कृत बनोता हैं।अगर हम अपने देश की प्राचीन शिक्षा पद्धति का अवलोकन करें तो पता लगता है कि इसमें बालक के शारीरिक मानसिक नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास का व्यापक दृष्टिकोण निहित था।

इस शोध पत्र में महाभारत में निहित शिक्षा व्यवस्था की प्रासंगिकता के बारे में बताया गया है कि वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा का पाठ्यक्रम शिक्षण विधियां गुरु शिष्य संबंध अनुशासन एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है महाभारत काल में शिक्षा का स्वरूप भी इसी प्रकार था।

शिक्षा का स्वरूप

महाभारत में व्यास जी ने उस काल की शिक्षण संस्थाओं का वर्णन किया जैसे आश्रम, गुरुकुल, राज्यसभाये, श्रेणीआदि। जिन संस्थाओं में विद्यार्थी शिक्षा शिक्षा लेने जाया करते थे राजकुमारों को भी सामान्य बालकों की तरह ही शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती थी।अनुभवशील एवं ज्ञानवान लोग समाज के अन्य लोगों को उपदेश दिया करते थे। उपदेश ,नीति ,धर्म, राजनीति न्याय सदाचार आदि से संबंधित होते थे। भीष्म, विदुर ,यक्ष ,इन्द्,शिव भगवान श्री कृष्ण आदि की शिक्षा का वर्णन महाभारत में वर्णित है। कृष्ण ने धर्म न्याय और सदाचार की शिक्षा अर्जुन को दी थी इसलिए अर्जुन ने उन्हें अपना गुरु संबोधित किया था ।महाभारत के प्रारंभ में व्यास ने मंगलाचरण में श्रीकृष्ण को नारायण तथा अर्जुन को नर कहा है। इस प्रकार गीता स्वयं नारायण द्वारा नर अर्जुन को दी गई शिक्षा है।

शिक्षा का उद्देश्य

इस काल में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना था ।भारतीय संस्कृति में मनुष्य के लिए तीन ऋणो की कल्पना की गई है –देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। अपने पूर्वजों से ही मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता था उस ज्ञान का अध्ययन कर उसे सदा तदानुकूल आचरण करके तथा उसमें वृद्धि कर हम ऋषि ऋण से पूर्ण उऋण हो सकते ह। देवताओं की पूजा करके हम देव ऋण से मुक्त हो सकते हैं ।ज्ञान ऋण को हटाने के लिए हम अपनी शिक्षा का प्रचार प्रसार करें तो इस ऋण से मुक्त हो सकते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य है। शिक्षा की व्युत्पति संस्कृत की शिक्षा धातु से हुई है जिसका अर्थ सीखना और सिखाना। इस अर्थ में यदि हम देखें तो शिक्षा में वह सब कुछ निहित है जो हम समाज में रहकर सीखते हैं ।शिक्षा शास्त्री शिक्षा शब्द का प्रयोग प्रति रूपों में करते हैं–

1. ज्ञान
2. पाठ्यचर्या का एक विषय।
3. व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया है।

वास्तव में यदि देखा जाए तो शिक्षा का तीसरा अर्थ अधिक उचित प्रतीत होता है। समाज में रहकर व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है उसी के परिणाम स्वरूप व स्वयं को पाशविक प्रवृत्तियों से ऊंचा उठाता है और सत्य और सामाजिक प्राणी बनने की इच्छा रखता है।शिक्षा के द्वारा ही बालक का मार्गदर्शन होता है परंतु इन संदर्भों में शिक्षा को समझने हेतु हमारे लिए अनिवार्य है कि हम शिक्षा को विद्यालय की चारदीवारी के अंदर चलने वाली प्रक्रिया ही ना माने वरन् इसे समाज में अनवरत चलने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें।निसंदेह हम यह कह सकते हैं, कि मानव जीवन को सजाने व सवारने में शिक्षा की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। शिक्षा शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है।शिक्षा में संलग्न प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा के संदर्भ में अपनी निजी धारणा रखता है और इसी कारण इसके वास्तविक अर्थ में मतैक्य नहीं है। शिक्षा की व्याख्या शाब्दिक अर्थों में निम्न प्रकार है–

एजुकेटम

इसका अर्थ है कि प्रशिक्षण लेना या शिक्षित करना।

एडुकेयर

इसका अर्थ है आगे बढ़ाना विकसित करना या पोषण करना है।

एडूसीयर

इसका अर्थ है बाहर की ओर अग्रसर करना।

ऊपर की दी गई विवेचना के आधार पर यदि हम शिक्षा का शब्द का अर्थ स्पष्ट करें तो हम कह सकते हैं शिक्षा बालक के अंतर्निहित गुणों या शक्तियों का प्रगटीकरण करके उसका विकास करते हुए उसे प्रशिक्षित करती है।

शिक्षा वह है जो मनुष्य मन पर शासन कर उसे शिक्षित व अनुशील बनाती है शिक्षा से विनय आता है। शिक्षा से मनुष्य अपनी भावनाओं और उत्तेजना ऊपर शासन करना सीखता है। भावनाओं पर नियंत्रण रखकर वह सदाचारी बन जाता है इसलिए कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में शिक्षा को विनय भी कहा है।

किसी भी विषय में व्यक्ति को पारंगत बनाना गुरु का ही प्रयास होता है परंतु दृढ़ता पूर्वक किया गया नियमित अभ्यास ही शिक्षकों पारंगत बनाता है। अर्जुन इसलिए श्रेष्ठ धनुर्धर बन सका क्योंकि वह निरंतर धनुर्विद्या का कठिन अभ्यास करता था उसने रात में भी बिना प्रकाश के लक्ष्य का भेदन का अभ्यास किया ।उसके अभ्यास और लगन को देखकर ही गुरु द्रोणाचार्य ने उससे कहा कि बेटा मैं ऐसा प्रयत्न करूंगा कि संसार में तुम्हारे सामान और कोई धनुधर हो सके । जिस प्रकार अर्जुन द्रोणाचार्य से वाण विद्या में सिद्धि प्राप्त की उसी प्रकार भीमसेन ने बलराम जी से खड़क,गदा ओर रथ शिक्षा ग्रहण की थी।

माध्यम महाभारत के अंत में महाभारतकार प्रत्यक्ष रूप में स्वयं या अप्रत्यक्ष रूप से किसी माध्यम से गृहस्थ धर्म,मानसिक व पवित्र तीर्थों का महत्ता, अन्नदान अहिंसा शाकाहार, तप, धर्म– अधर्म, आतिथ्य सत्कारमहत्ता गौ–सेवा शिष्टाचार, धैर्य, नीति, न्याय, कर्मयोग,वानप्रस्थ के कर्तव्य तथा सन्यास आदि के उपदेश दिए हैं। यह सभी उदात्त जीवन के मूल्य हैं इसकी मानव जीवन में उपस्थिति भी तत्कालीन शिक्षा का उद्देश्य है।

इस विवरण के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि उस काल में शिक्षा के तीन उद्देश्य थे।

1. शिक्षार्थी को संबंधित विषय में पारंगत करना तथा उसे विशेषज्ञता प्रदान करना।
2. शिक्षार्थी को नैतिक सामाजिक संस्कृति व मानवीय मूल्यों के प्रति सचेत करना।
3. शिक्षार्थी में नैतिक व मानवीय मूल्यों व आदर्शों के की प्रतिष्ठा बढ़ाना।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

महाभारत काल में शिक्षा का कोई निश्चित पाठ्यक्रम नहीं थ।। ज्ञानी वृद्ध तपस्वी एवं साधक जीवन का व्यापक अनुभव प्राप्त व्यक्तियों द्वारा होता था ।उस काल में शिक्षा के केंद्र आश्रम आदि थे इसमें ऋषि–मुनियों व वेदों का ज्ञान रखने वालों के द्वारा ही शिक्षा दी जाती थी। उन्हें वेदों का ज्ञान कराया जाता था। व्यास जी ने कठिन परिश्रम करके तीन वेदों की बिखरी हुई ऋचाओं का संग्रह करके उसे संगठित एवं तीन वर्गों में वर्गीकृत किया ह। जो इस प्रकार है 1.ऋग्वेद 2.सामवेद 3.यजुर्वेद

1. ऋग्वेद. प्राचीन वेद है इसमें 100 मंडल हैं, 1028 सूक्त और लगभग 10500 मंत्र हैं।
2. सामवेद ..सामवेद का वेदों में द्वितीय स्थान है इसमें मंत्रों की संख्या लगभग 1600 से अधिक है।
3. यजुर्वेद.. यजुर्वेद तृतीय वेद के अंतर्गत दो भेद,कृष्ण और शुक्ल हैं शुक्ल की मंत्र संख्या 2000 है।

छंदोंन्यपोनिषद में शिक्षा के विषयों का उल्लेख है इस में इतिहास, पुराण, व्याकरण, श्राद्ध, कल्प, गणित, उत्पत्ति ज्ञान विधि शास्त्र नीति देव –विधि भूत विद्या,नक्षत्र विद्या निरुक्त, धनुर्विद्या, ज्योतिष, संगीत तथा शिल्प आदि का उल्लेख है। महाभारत काल में आचार्य शोनक के असंख्य ग्रंथों में प्रवीण थे।

इन विषयों के अतिरिक्त कुछ अन्य विषय जैसे सैन्य शिक्षा का प्रशिक्षण लेने वालों को खड़क, गदा, धनुष शक्ति, तोमर शूलआदि के प्रयोग की शिक्षा दी जाती थी।युद्ध के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान कराया जाता था ।जैसे द्रोणाचार्य कौरवों और पांडवों को हाथी घोड़ो रथ और पृथ्वी पर युद्ध गदा युद्ध तलवार चलाना तमोर शक्ति आदि के प्रयोग एवं का संकरीण युद्ध की शिक्षा दी थी।जैसे मूर्तिकला चित्रकला नाट्य कला नृत्य एवं संगीत की शिक्षा धर्म शास्त्र की शिक्षा भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित थी।

दिव्यशास्त्रों जैसा वर्णन महाभारत में हुआ है उस से ज्ञात होता है की दिव्य शास्त्रों की शिक्षा उस काल में दी गई थी अर्जुन ने शिव की आराधना तथा इंद्र से शस्त्र प्राप्त कर विजय प्राप्त की थी।

महाभारत काल में कृषि ,पशुपालन, वाणिज्य हस्ती– पालन एवं पशुपालन की भी शिक्षा दी जाती थी।चिकित्सा शास्त्र भी अध्ययन का एक विषय था। सर्पदंश के निवारण की भी शिक्षा दी जाती थ। कश्यप मुनि इस विद्या के ज्ञाता थे मृत को जीवित करने वाले संजीव विद्या का भी अध्ययन होता थ। शुक्राचार्य इस विद्या में निपुण थे कच ने उनसे इस शिक्षा को पाया था। श्रुति विद्या का भी अध्ययन होता था इससे भविष्य की घटनाओं का पता चलता था इधर से इस विद्या के ज्ञाता थे महाभारत में इस शिक्षा का उल्लेख है उसकी पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्यों से भी होती है विषय का पाठ्यक्रम गुरु ही निर्धारित करता था यह गुरु की योग्यता तथा छात्र की आत्मनिर्भरता पर आधारित होता था।

शिक्षण विधि

महाभारत काल में शिक्षण विधि प्रत्यक्ष थी।वह शुद्ध परंपरा पर आधारित थी गुरु शिष्य को अपने सामने बिठाकर शिक्षा देते थे ।अतः यह आवश्यक था कि शिक्षार्थी गुरु की बात को पूरे मनोयोग से सुने मनोयोग पूर्वक तभी सुना जा सकता था जब शिष्य का मन एकाग्र हो और वह ब्रह्मचर्य का पालन करते थे इसलिए गुरुकुल में रहकर वेदा अध्ययन करते समय शिक्षार्थियों को ब्रह्मचारी रहना आवश्यक था यह भी आवश्यकता की विद्यार्थी गुरु की शिक्षा को केवल सुने ही नहीं बल्कि इसका अनुसरण भी करें। विद्यार्थियों को सुख का परित्याग करना चाहिए क्योंकि सुखाथी को विद्या प्राप्त नहीं होती आलस्य से मद मोह ,चंचलता गोष्ठी उद्दंडता अभिमान और लोभ सात विद्यार्थियों के शत्रु माने गए हैं। अध्ययन करते समय गुरु शिष्य के स्तर का ध्यान अवश्य रखते थ। गुरु के लिए शीघ्रता वर्जित थी वह धैर्य पूर्वक पाठ का श्रवण वह अभ्यास हो जाने पर ही नया पाठ प्रारंभ करते थे।

गुरु शिष्य संबंध

महाभारत काल में गुरु शिष्य संबंधों पर भी प्रकाश डाला गया है शिक्षक शिक्षार्थी पुत्रवत स्नेह करता था। अपने पुत्र के समान शिष्य भी उनका प्रिय होता था इसलिए द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा तथा अपने शिष्य अर्जुन को समान रूप से प्रेम करते थ। सामाजिक दृष्टि से भी शिष्य की स्थिति पुत्रवत होती थ। शिष्य को छात्र इसलिए कहा जाता था कि गुरु उसको ज्ञान से आरक्षित कर दोषों से बचाते थे। शुक्राचार्य ने अपने प्राणों को संकट में डाल कर भी कच को मृत संजीवनी विद्या सिखाई इसलिए महाभारत में कहा गया कि गुरु को ऐसा

कार्य नहीं करना चाहिए जिसमें छात्रों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े । महाभारत काल यह भी कहता है कि गुरु और छात्र के भोजन वस्त्र और स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। छात्र से यही उपेक्षा की गई कि गुरुकुल के नियमों व गुरु की आज्ञा का पालन करें। छात्र को गुरु से पहले सैया त्याग करना चाहिए फिर नित्यक्रम से निपट कर संध्या करें। और गुरु के लिए संविदा लेकर आए। शिष्य को गुरु के गृह कार्यों में भी सहायता करनी चाहिए।

गुरु भक्ति उस काल के छात्रों के लिए अनिवार्य धर्म था। इसके कई उदाहरण हैं द्रोण ने एकलव्य को धनुर्विद्या नहीं दी फिर भी उन्हें गुरु मानते थे और उनके दक्षिणा में अंगूठा मांगने पर एकलव्य ने अंगूठा काट कर दे दिया थ। करण अपने गुरु परशुराम की नींद भंग ना हो इसलिए गुरु का सिर जंघा पर रखें अपनी जंघा कीड़े से कुत्तर वाता रहा। शिष्य में इतनी गुरु भक्ति होती थी कि गुरु के भोजन से पूर्व भोजन नहीं करते थे।

अनुशासन

महाभारत काल में गुरु व शिष्य के मध्य सम्मान और आत्मीयता का संबंध होता था था। गुरुकुल में अनुशासन अपने आप रहता था यह अनुशासन स्वत स्फूर्त रहता था। आश्रमों के छात्र ब्रह्मचर्य पूर्ण और संयमित जीवन जीते थे परनिंदा असत्य भाषण चुगल खोरी असभ्य दृश्य दर्शन तथा कुसंगति आदि छात्रों के लिए नितांत वर्जित कार्य थे। छात्रगण आचार्य के साथ हवन होम आदि करते थे आचार्य के खड़े होने पर बैठे नहीं सकते थे। गुरु निंदा उनके लिए सर्वथा वर्जित थी। विलासिता पूर्ण जीवन का तो स्वप्न में भी नहीं देख सकते थे। आलस्य, मोह, चंचलता उद्दंडता तथा स्वार्थ उनके लिए वर्जित थे। छात्र अध्ययन काल में धन संग्रह नहीं कर सकते थे।

स्त्री शिक्षा

महाभारत काल में स्त्री शिक्षा का उल्लेख मिलते हैं।स्त्री शिक्षा का काफी हद तक विस्तार था स्त्रियों को वेदों की शिक्षा दी जाती थी केवल उच्च कुल की स्त्रियां ही अत्यधिक शिक्षित होती थी जैसे गांधारी अर्थशास्त्र तथा द्रौपदी नीति शास्त्र में सुभद्रा ,विदुला और सत्यवती के मुख से महाभारत काल में राजनीति संबंधों की जो बात बतलाई है उसे पता लगता है कि उन्हें विधिवत राजनीति शिक्षा प्राप्त की होगी। स्त्रियों को ललित कलाओं की भी शिक्षा दी जाती थी जैसे नृत्य, गीत, नाट्य तथा चित्रकला इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि महाभारत काल स्त्री शिक्षा का पूर्ण रूप से पक्षधार था।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महाभारत काल की शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना महाभारत कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
2. महाभारत काल की शिक्षा को वर्तमान शिक्षा से जोड़ना।

निष्कर्ष

इस शोध प्रपत्र के द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, कि महाभारत कालीन शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से बहुत भिन्नता थी वहां शिक्षा को उचित स्थान दिया जाता था गुरु व शिष्य का संबंध मधुमेह होता था समाज में गुरु का स्थान बहुत कुछ वह पूजनीय माना जाता था।

आभार

इस लेख के लिए लेखिका सर्वप्रथम कृष्णजन्म भूमि पुस्तकालय अधीक्षक की विशेष रूप से आभारी है, जिन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण करने में अत्यंत सहायता प्रदान की तथा उन सभी शिक्षाविदों का आभार प्रकट करती है जिन्होंने वर्तमान अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार करने तथा कार्य विकास में सहायता प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य ,दीपंकर ष्कौटिल्य कालीन भारतष उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ,1988
2. जी नवल नालंदा विशाल हिंदी शब्द सागर इंपीरियल बुक डिपो दिल्ली संवत 2007
3. जयसवाल सीताराम शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन राज प्रकाशन हरियाणा प्रथम संस्करण 1993
4. पांडे राम शकल प्रकाशन गीता प्रेस गोरखपुर 1968 शिक्षा दर्शन विनोद पुस्तक मंदिर
5. व्यास महर्षि वेद सचित्र महाभारत गोवर्धन पुस्तकालय सन 1986
6. सक्सेना सरोज शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार साहित्य प्रकाशन आगरा